

प्रकाशित

रूपा पब्लिकेशन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड 2024 7/16, अंसारी रोड, दरियागंज

नई दिल्ली 110002 कॉपीराइट © एस. जयशंकर 2024

इस पुस्तक में व्यक्त विचार और राय लेखक के अपने हैं और तथ्य जैसा कि उनके द्वारा रिपोर्ट किया गया है, जिनकी यथासंभव सत्यापित किया गया है, और प्रकाशक किसी भी तरह से इसके लिए उत्तरदायी नहीं हैं।

सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से पुनरुत्पादित, प्रसारित या संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।

पी-आईएसबीएन: 978-93-5702-760-1

ई-आईएसबीएन: 978-93-5702-640-6

पहला संस्करण 2024

10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

लेखक के नैतिक अधिकार को सुरक्षित रखा गया है।

यह पुस्तक इस शर्त पर बेची जाती है कि यह व्यापार या अन्यथा, प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, किसी भी रूप में बाइंडिंग या कवर में उधार, पुनर्विक्रय, किराए पर या अन्यथा प्रसारित नहीं की जाएगी, जिसमें यह प्रकाशित हुई है।

## विषय-सूची

[*कवर*](file://localhost/C:/temp/calibre_t0o9ycjv/d4cmxah0_pdf_out/OEBPS/Cover.xhtml)

[*हाफ-टाइटल पेज*](#_bookmark0)[*शीर्षक पृष्ठ*](#_bookmark1)

[*कॉपीराइट पृष्ठ*](#_bookmark2)

[*विषय-सूची*](#_bookmark3)

[*संक्षिप्ताक्षरों की*](#_bookmark4) *सूची प्रस्तावना*

अध्याय 1। विश्व का एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना अध्याय 2। विदेश नीति [और आप अध्याय 3। विश्व की](#_bookmark5) स्थिति [अध्याय 4। भविष्य की ओर लौटना](#_bookmark6)

[अध्याय 5। एक परिवर्तनकारी दशक](#_bookmark7) [अध्याय 6। दोस्त](#_bookmark8) बनाना, [लोगों को प्रभावित करना अध्याय 7। क्वाड: एक पूर्वानुमानित](#_bookmark9) समूह अध्याय 8। चीन से निपटना

अध्याय 9। सुरक्षा की पुनर्कल्पना अध्याय 10। वे रास्ते जो नहीं चुने गए अध्याय 11। भारत क्यों मायने *रखता है आभार*

*बैककवर*

## संक्षिप्ताक्षरों की सूची

एआई (AI) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस Intelligence

एपेक (APEC) एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग <ACRONYM\_0> क्षेत्रीय मंच Economic Cooperation ARFASEAN Regional Forum

आसियान (ASEAN) दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ एयू (AU) अफ्रीकी संघ Association of South-East Asian Nations AUAfrican Union

बीजेपी (BJP) भारतीय जनता पार्टी Bharatiya Janata Party

बिम्स्टेक (BIMSTEC) बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation

आरआईबी (BRI) बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव and Road Initiative

ब्रिक्स (BRICS) ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका कैरिकॉम (CARICOM) कैरिबियन समुदाय Brazil, Russia, India, China, South Africa CARICOMCaribbean Community

सीडीआरआई (CDRI) आपदा प्रतिरोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन सीएलएसी (CELAC) लैटिन अमेरिकी और कैरिबियन राज्यों का समुदाय सीईपीए (CEPA) व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता सीइटी (CET) महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियांCELAC Community of Latin American and Caribbean States CEPAComprehensive Economic Partnership Agreement CETCritical and Emerging Technologies

सीएम (CM) मुख्यमंत्री Chief Minister

सीपीईसी (CPEC) चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा सीटीसी (CTC) आतंकवाद-निरोध समिति China–Pakistan Economic Corridor CTCCounter-Terrorism Committee

ईएएम (EAM) विदेश मंत्री External Affairs Minister

ईसीटीए (ECTA) आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता यूरोपीय संघ (EU) यूरोपीय संघ Economic Cooperation and Trade Agreement EUEuropean Union

एफडीआई (FDI) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश Direct Investment

एफआईपीआईसी (FIPIC) भारत-प्रशांत द्वीप समूह सहयोग मंच एफटीए (FTA) मुक्त व्यापार समझौता for India–Pacific Islands Cooperation FTAFree Trade Agreement

जीसीसी (GCC) खाड़ी सहयोग परिषद Gulf Cooperation Council

जीडीपी (GDP) सकल घरेलू उत्पाद Domestic Product

एचएडीआर (HADR) मानवीय सहायता और आपदा राहत Humanitarian Assistance and Disaster Relief

आई2यू2 (I2U2) भारत, इज़राइल, संयुक्त अरब अमीरात, संयुक्त राज्य अमेरिकाAmerica

आईएएफएस (IAFS) भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन India-Africa Forum Summit

आईबीसा (IBSA) भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका आईसीडब्ल्यूएफ (ICWF) भारतीय समुदाय कल्याण कोष आईएफएफ (IFF) पहचान मित्र या शत्रुICWF Indian Community Welfare Fund IFFIdentification Friend or Foe

आईजीएन (IGN) अंतर-सरकारी वार्ता Intergovernmental Negotiations

आईएमईसी (IMEC) भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा India–Middle East–Europe Economic Corridor

आईपीएमडीए (IPMDA) इंडो-पैसिफिक पार्टनरशिप फॉर मैरीटाइम डोमेन अवेयरनेस आईओसी (IOC) हिंद महासागर आयोग Indo-Pacific Partnership for Maritime Domain Awareness IOCIndian Ocean Commission

आईपीओआई (IPOI) इंडो-पैसिफिक ओशन इनिशिएटिव Oceans Initiative

आईओआरए (IORA) हिंद महासागर रिम एसोसिएशन Indian Ocean Rim Association

आईपीईएफ (IPEF) इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क Indo-Pacific Economic Framework

आईएसए (ISA) अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन International Solar Alliance

आईटी (IT) सूचना प्रौद्योगिकी Information Technology

आईयूयू (IUUI) अवैध, असूचित और अनियमित Unreported and Unregulated

एलआईएफई (LIFEL) पर्यावरण के लिए जीवन शैली Lifestyle for Environment

एलएसी (LAC) वास्तविक नियंत्रण रेखा Line of Actual Control

एलडीसी (LDC) अल्प विकसित देश Developed Country

एलडब्ल्यूई (LWE) वामपंथी उग्रवाद Left Wing Extremism

एमएमपीए (MMPA) प्रवासन और गतिशीलता साझेदारी समझौता एनएसजी (NSG) परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह Migration and Mobility Partnership Agreement NSGNuclear Suppliers Group

ओडीए (ODA) आधिकारिक विकास सहायता ओ-आरएएन (O-RAN) ओपन रेडियो एक्सेस नेटवर्क ओएसओडब्ल्यूओजी (OSOWOG) एक सूर्य एक विश्व एक ग्रिड पीआईएफ (PIF) प्रशांत द्वीप समूह मंच Official Development Assistance O-RANOpen Radio Access Networks OSOWOGOne Sun One World One Grid PIFPacific Islands Forum

पीएलए (PLA) पीपुल्स लिबरेशन आर्मी Liberation Army

पीएलआई (PLI) उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन Production-Linked Incentive

PoK पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर Pakistan-Occupied Kashmir

पीपीई (PPE) व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण Protective Equipment

प्रगति (PRAGATI) प्रो-एक्टिव गवर्नेंस एंड टाइमली इम्प्लीमेंटेशन पीआरसी (PRC) पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना Pro-Active Governance and Timely Implementation PRCPeople’s Republic of China

पीएम (PM) प्रधान मंत्री Minister

आरसीईपी (RCEP) क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी <ACRONYM\_0> रूस-भारत-चीन Regional Comprehensive Economic Partnership RIC Russia-India-China

सार्क (SAARC) दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन सागर (SAGAR) क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास Asian Association for Regional Cooperation SAGARSecurity and Growth for All in the Region

एससीओ (SCO) शंघाई सहयोग संगठन एससीआर (SCRIS) आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल एसडीजी (SDGS) सतत विकास लक्ष्य Shanghai Cooperation Organization SCRISupply Chain Resilience Initiative SDGSustainable Development Goals

एसएमई (SME) लघु और मध्यम उद्यम Small and Medium Enterprise

एसओपी (SOP) मानक संचालन प्रक्रिया Standard Operating Procedure

स्पाइस (SPICES) स्मार्ट, प्रिसिजन इम्पैक्ट, कॉस्ट-इफेक्टिव Smart, Precise Impact, Cost-Effective

एसआर (SR) विशेष प्रतिनिधि यूएई (UAE) संयुक्त अरब अमीरात यूके (UK) यूनाइटेड किंगडम Representative UAEUnited Arab Emirates UKUnited Kingdom

यूएनसीएलओएस (UNCLOS) संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून अभिसमय <ACRONYM\_0> संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क कन्वेंशन यूएन जीए (UNGA) संयुक्त राष्ट्र महासभा Nations Convention on the Law of the Sea UNFCCC United Nations Framework Convention on Climate Change UNGAUnited Nations General Assembly

संयुक्त राष्ट्र (UN) संयुक्त राष्ट्र United Nations

यूएनएससी (UNSC) संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद अमेरिका (US) संयुक्त राज्य अमेरिका United Nations Security Council USUnited States of America

यूएसएसआर (USSR) सोवियत समाजवादी गणराज्यों का संघ डब्ल्यूएचओ (WHO) विश्व स्वास्थ्य संगठन of Soviet Socialist Republics WHOWorld Health Organization

डब्ल्यूटीओ (WTO) विश्व व्यापार संगठन World Trade Organization

कुछ यात्राएँ हमें अतीत में ले जाती हैं, कुछ भविष्य में। ये सभी मिलकर एक दशक के बदलाव को समझाने का प्रयास करती हैं।

वैश्विक पदानुक्रम में चढ़ने की भारत की खोज एक अंतहीन यात्रा है। लेकिन जैसा कि हम की गई प्रगति का जायजा लेते हैं और आगे की चुनौतियों का अनुमान लगाते हैं, यह निश्चित रूप से आश्वस्त करने वाला है कि यह इतने गहरे राष्ट्रीय प्रतिबद्धता और आत्मविश्वास से प्रेरित है। चाहे अपनी विरासत और संस्कृति से ताकत प्राप्त करना हो या लोकतंत्र और प्रौद्योगिकी की आशावाद के साथ चुनौतियों का सामना करना हो, यह निश्चित रूप से एक नया भारत है, वास्तव में एक ऐसा भारत जो अपने हितों को परिभाषित करने, अपनी स्थिति व्यक्त करने, अपने समाधान खोजने और अपने मॉडल को आगे बढ़ाने में सक्षम है। संक्षेप में, यह एक ऐसा भारत है जो अधिक भारत है।

एक खुली हुई टेक-एड (techade) में वैश्वीकरण के लिए ऐसे भरोसेमंद सहयोग की आवश्यकता होगी जो हम सभी के लिए एक नया अनुभव होगा।

#### एक उभरती हुई शक्ति की गाथा

यह वही परिदृश्य है जिसका सामना भारत और दुनिया कर रहे हैं क्योंकि वे दोनों विचार-विमर्श और गणना कर रहे हैं। हम अस्थिरता और उथल-पुथल की ओर बढ़ रहे हैं, जहाँ शमन और नेविगेशन साथ-साथ चलते हैं। वास्तव में, वह परिवर्तन जिसके बारे में हमने लंबे समय से अनुमान लगाया था, अब वास्तव में हम पर आ गया है। बाहरी तौर पर, भारत समान विचारधारा वाले देशों के साथ अभिसरण के गुणों की खोज कर रहा है, भले ही वह अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखे। इसकी घरेलू यात्रा इसे भागीदारों की बढ़ती श्रृंखला को जुड़ाव की नई शर्तें प्रदान करने में सक्षम बनाती है। सबसे अधिक आबादी वाले राष्ट्र और वर्तमान में पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में, जी20 की अध्यक्षता जिस तरह से इसने की, उससे इसकी प्रमुखता रेखांकित होती है। एक बदलते भारत और अधिक गतिशील दुनिया के बीच की बातचीत स्पष्ट रूप से दोनों के लिए नई है। ऐसी स्थिति में, इसके नेतृत्व की गुणवत्ता ही अंतर पैदा करेगी। मैंने असाधारण तनाव के तहत एक दुनिया की विभिन्न घटनाओं को पकड़ने की कोशिश की है और उन्हें ऐसे रुझानों के रूप में प्रस्तुत किया है जिनके मुकाबले हम भारत की संभावनाओं का आकलन करते हैं। मेरे पिछले प्रयास की तरह, यह भी एक तर्कपूर्ण समाज में चल रही बहस में योगदान करने के इरादे से है।

दुनिया पर प्रभाव डालने वाले प्रमुख राष्ट्र एक निर्णायक घटना के बाद ऐसा करते हैं। यह एक संघर्ष, एक क्रांति या एक बड़ा आर्थिक बदलाव हो सकता है। इन सभी के मूल में क्षमताओं में एक छलांग और उस स्तर पर एक नए खिलाड़ी के चरित्र लक्षण दोनों हैं। भारत के मामले में, इसकी प्रारंभिक कूटनीति अंततः क्षमता कारक द्वारा बाधित हुई थी। यह राष्ट्रीय सुरक्षा और राजनीतिक चुनौतियों में दिखाई दे सकता था, लेकिन वास्तव में यह सामाजिक-आर्थिक और तकनीकी क्षेत्रों में सीमित प्रगति का संचयी परिणाम था। लेकिन कहीं न कहीं, एक महान सभ्यता का अपर्याप्त प्रक्षेपण भी था। भारत की प्रगति उसके सहकर्मी समूह के अन्य लोगों की तुलना में अधिक लड़खड़ाती रही है। आज, ये सभी चर एक साथ खेल में आ रहे हैं क्योंकि भारत आत्मनिर्भर तरीके से कई मोर्चों पर आगे बढ़ रहा है। राजनीति, अर्थशास्त्र, जनसांख्यिकी, संस्कृति और विचार एक शक्तिशाली संयोजन बनाते हैं। व्यापक डोमेन में ये गहरे परिवर्तन नए भारत के निर्माण में योगदान दे रहे हैं।

पिछले दशक में भारत के अंतरिक्ष का विस्तार और इसकी अंतरराष्ट्रीय प्रोफ़ाइल में वृद्धि देखी गई है। इसकी *कूटनीति का* मंडल एक स्पष्ट रूप ले चुका है, भले ही 'पड़ोसी पहले' नीति ने जड़ें जमा ली हों और विस्तारित

# अध्याय 3।

## दुनिया की स्थिति

### परिदृश्य को समझना

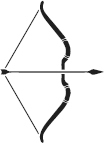
WWजब सितंबर 2022 में समरकंद में पीएम मोदी *ने घोषणा की* कि यह युद्ध का युग नहीं है, तो यह बयान दुनिया भर में गूंज उठा। यह स्वाभाविक रूप से अपने तत्काल संदर्भ के कारण हुआ। लेकिन इस संदेश ने हमारी दुनिया की परस्पर निर्भरता को भी दर्शाया, जिसने अब हर किसी के लिए संघर्ष को बहुत खतरनाक बना दिया है। एक मायने में, यह उन लोगों के लिए एक चेतावनी भी थी जो अपने स्वयं के विकल्पों पर विचार कर रहे होंगे। तथ्य यह है कि ऐसी घोषणा करनी पड़ी, यह वर्तमान वैश्विक व्यवस्था की नाजुकता को दर्शाता है। यह पहले से ही अच्छी तरह से पहचाना गया था कि यह संक्रमण में था। लेकिन यह प्रक्रिया आज हम जो रूप देख रहे हैं, उसे ले सकती है, इसकी उम्मीद बहुत कम लोगों ने की थी।

W

बहुत कम लोगों ने की थी।

जब मैंने 'द *इंडिया वे'* लिखी थी, तब दुनिया अनिश्चित और अप्रत्याशित लग रही थी। हमें तब क्या पता था कि हमने कुछ भी नहीं देखा था। बीते वर्षों में, हम कोविड महामारी से आहत हुए हैं, यूक्रेन संघर्ष से प्रभावित हुए हैं, पश्चिम एशिया में एक नए स्तर की हिंसा से जूझ रहे हैं, बार-बार जलवायु घटनाओं से पीड़ित हुए हैं और गंभीर आर्थिक तनाव का सामना कर रहे हैं। उन्होंने पूर्व-पश्चिम ध्रुवीकरण और उत्तर-दक्षिण विभाजन दोनों को बढ़ा दिया है। यदि मेरे पिछले प्रयास के साथ कोई निरंतरता है, तो वह अंतर्निहित घटना में है कि कैसे राष्ट्र-राज्य, जो अभी भी अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की मुख्य अवधारणा है, वैश्वीकरण की समस्याओं से जूझते हैं। यह मुख्य निष्कर्ष पर भी लागू होता है: कि दुनिया हमारे प्रत्येक के लिए पहले से कहीं अधिक मायने रखती है। जब हम इस पर विचार करते हैं, तो हर भारतीय के सामने यह सवाल है कि समकालीन युग में हमारा मूल्य, वजन और संभावनाएं क्या हैं। हम यह नहीं जानते कि तत्काल भविष्य में क्या है, क्योंकि तकनीकी, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन की गति बहुत तेज हो गई है। यह अब अधिक चर का मुद्दा नहीं है; हम वास्तव में अज्ञात क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं। स्वाभाविक रूप से, ऐसे क्षण में, यह विचार करना उचित है कि हमारे पूर्वजों ने अपने समय की अनिश्चितताओं से कैसे निपटा।

और उस संदर्भ में, अतीत से समानताएं निश्चित रूप से कुछ मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।



भारतीय परंपराओं में कूटनीति से सबसे अधिक लोकप्रिय रूप से जुड़े दो व्यक्ति निस्संदेह रामायण में हनुमान और महाभारत में श्री कृष्ण हैं। एक को सेवा के एक उत्कृष्ट अवतार के रूप में देखा जाता है, जो किसी भी बाधा से निडर होकर अपने कर्तव्यों का पालन करता है। दूसरे को अधिक एक रणनीतिकार और सलाहकार के रूप में माना जाता है, जो कठिन क्षणों में ज्ञान का स्रोत है। प्रत्येक का दिए गए संदर्भ में अपना महत्व है, और हनुमान अनिश्चितता और कठिन बाधाओं का सामना करने पर अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में होते हैं। एक राष्ट्र के उदय की प्रक्रिया उन कठिन अभियानों से अलग नहीं है जिन्होंने हम दोनों को हमारी चेतना में गहराई से स्थापित किया है। वास्तव में, यह एक अभियान से कहीं अधिक है; यह संभावनाओं का विस्तार करने का एक अंतहीन अभ्यास है। और हनुमान की तरह, इसके लिए सच्चे विश्वासियों और समस्या-समाधानकर्ताओं की आवश्यकता होती है जो 24x7 इसमें लगे रहते हैं।

लंका में भगवान राम के दूत के रूप में, हनुमान की किसी शत्रु के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने की चतुराई, और यहाँ तक कि रानी सीता तक पहुँचने की क्षमता भी महत्वपूर्ण विकास थे। इसके अतिरिक्त, उन्होंने राक्षसों द्वारा अपनी *पूंछ* जलाए जाने के कारण हुए दुर्व्यवहार का उपयोग करके शहर को जलाकर उन्हें अपार क्षति पहुँचाई। लेकिन उन्होंने रावण, उसके स्वभाव और उसके सलाहकारों के बारे में भी महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि विकसित की। उसके भाई विभीषण के बारे में उसका निर्णय भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जो तब उसके साथ खड़ा था जब उसे दरबार में लाया गया था। यह हनुमान का उसकी ईमानदारी का प्रमाण है जिसने राम को बाद में रावण से विमुख होने के बाद विभीषण का स्वागत करने के लिए प्रोत्साहित किया। आम तौर पर, लोग कूटनीति को केवल मध्यस्थता के रूप में सोचते हैं। लेकिन वास्तव में, इसमें बहुत कुछ है, जिसमें प्रतिस्पर्धियों, सहयोगियों और परिदृश्य को सही ढंग से पढ़ने की क्षमता भी शामिल है।

हनुमान को उनकी दृढ़ता के लिए भी जाना जाता है, एक ऐसा गुण जो उन्होंने तब प्रदर्शित किया जब उनके साथी बंदर रानी सीता की खोज पर हार मानने को तैयार थे। उनकी समस्या-समाधान और सुधार करने की क्षमता भी तब स्पष्ट होती है जब वे जीवन रक्षक पौधा लाने के लिए एक पूरे पहाड़ को उठाते हैं। युद्ध के अंत में, उन्हें भरत को युद्ध के परिणाम के बारे में सूचित करने और यह आकलन करने के लिए एक नाजुक मिशन पर भेजा जाता है कि क्या वह वास्तव में भगवान राम के अयोध्या लौटने का स्वागत करेंगे। ये सभी गुण आज एक सफल राजनयिक के प्रतिष्ठित गुण हैं।

कूटनीति में निहित जटिलताओं का एक अलग उदाहरण बंदर-राजकुमार अंगद द्वारा प्रदान किया गया है। उन्हें भी राम ने लंका में रावण के दरबार में भेजा था और उन्होंने चतुराई से अपनी ताकत का इस्तेमाल किया। उनके मामले में, वह विशेष रूप से उनका पैर था, जिसे एक बार जमीन पर मजबूती से रखने के बाद हिलाया नहीं जा सकता था। इसे एक चुनौती बनाकर, उन्होंने उन लोगों को शर्मिंदा किया जिन्होंने असफल रूप से उनके अंग को हिलाने की कोशिश की। अंत में, उन्होंने रावण को अपमानित किया जब बाद वाले ने उस तक पहुँचने की कोशिश की और उसका ताज गिरा दिया जिसे अंगद ने उठाया और भगवान राम को वापस फेंक दिया। एक दूत के रूप में, वह न केवल रावण द्वारा पेश किए गए प्रलोभनों का विरोध करता है, बल्कि अपने बिंदुओं को प्रभावी ढंग से बनाने के लिए सुधार भी करता है। उसे उचित सीट से वंचित किए जाने पर, कहा जाता है कि उसने अपनी पूंछ को लंबा करके अपने लिए एक कुर्सी बनाई और खुद को अपने सामने राक्षस-राजा के बराबर बैठाया। आखिरकार, दिमागी खेल कूटनीति का एक प्रमुख तत्व हैं।

एक बहुत ही अलग तरह का कौशल उनकी माँ तारा द्वारा प्रदर्शित किया गया था, जो बंदर-राजा वाली की पत्नी थी, जिसे पहले भगवान राम ने मार डाला था। हनुमान और अंगद के मामलों में, वे रावण, एक अभिमानी और असमाधेय शत्रु से निपट रहे थे। उनका मिशन जानकारी प्राप्त करना और मनोवैज्ञानिक घाव छोड़ना था जो दूसरी तरफ के मनोबल को प्रभावित करेगा। तारा के मामले में, वह अपने वर्तमान राजा सुग्रीव के सहयोगियों राम और लक्ष्मण के गुस्से का सामना कर रही थी। सुग्रीव सिंहासन पर चढ़ने के बाद सीता का पता लगाने के अपने वादे को पूरा करने में विफल रहा था।

# अध्याय 4।

## भविष्य की ओर वापसी

### जैसे-जैसे राष्ट्रीय सुरक्षा वैश्वीकरण को संतुलित करती है

TTTTTTदुनिया के बाकी हिस्सों की तरह, भारत का भी एक बड़ा हिस्सा वैश्वीकरण की सुखदायक ध्वनियों से बहक गया था। पहले ब्रेक्सिट और यूरोपीय प्रयोग को उसकी चुनौती आई। उसके तुरंत बाद डोनाल्ड

T

ट्रम्प का चुनाव *और 'अमेरिका फर्स्ट'* की घोषणा हुई। चीन-अमेरिका की एक तनातनी, जिसे कथित तौर पर केवल सामरिक माना जा रहा था, समय के साथ वास्तव में गंभीर हो गई। प्रत्येक घटना ने उन कमजोरियों की अनुभूति को बढ़ाया जो आर्थिक और प्रौद्योगिकी एकाग्रता ने पैदा की थीं। फिर कोविड महामारी आई, जिसने वैश्विक दक्षता के नाम पर कई अर्थव्यवस्थाओं के खोखलेपन को पूरी तरह से उजागर कर दिया। लचीली और विश्वसनीय आपूर्ति श्रृंखलाओं के महत्व के साथ-साथ डिजिटल विश्वास और पारदर्शिता पर भी एक नई सहमति उभरने लगी। इस बीच, अफगानिस्तान से अमेरिकी सैनिकों की जल्दबाजी में वापसी के साथ एक पुरानी समस्या अचानक समाप्त हो गई। इसके बाद यूक्रेन संघर्ष हुआ, जिसके वैश्विक प्रभाव ने पुष्टि की कि हम सभी अब कितनी गहराई से एकीकृत हैं। और सबसे कम नहीं, पश्चिम एशिया के बारूद के ढेर में भयावहता के एक नए स्तर के साथ हमारे सबसे बुरे डर का एहसास हुआ।

तो, हमारे पास वैश्विक राजनीति की उन सभी नकारात्मकताओं का पुनरुत्थान है जिन्हें हाल ही में अप्रचलित माना जाता था। क्या हमने वास्तव में इसे आते हुए नहीं देखा? क्या हम इनकार में थे? शायद दोनों का कुछ संयोजन, मजबूत निहित स्वार्थों, अंतरराष्ट्रीय समुदाय को बहकाने की उनकी क्षमता और सर्वोत्तम की आशा करने की मानवीय प्रवृत्ति से बढ़ा हुआ। वैश्वीकरण के सभी आशावादी आश्वस्त थे कि यह हमारे पीछे है, अब धमाकेदार वापसी कर चुका है। विश्व राजनीति प्रौद्योगिकी, वित्त, व्यापार और संसाधनों की तीव्र अंतर्निर्भरता के साथ सुरक्षा, संप्रभुता, गोपनीयता और मूल्यों की भारी मजबूरियों के साथ संघर्ष कर रही है। पूर्व हमें घनिष्ठ संबंध विकसित करने की ओर खींचता है, जबकि उत्तरार्द्ध हमें इसके कमजोर परिणामों के बारे में सचेत करता है। इन विरोधाभासों को नेविगेट करना निश्चित रूप से हमारी सारी रचनात्मकता को चुनौती देगा क्योंकि वर्तमान के तनाव अब भविष्य की संभावनाओं से टकराते हैं।

इसके अव्यवस्थित परिणामों से अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का एक अलग ढांचा उभर सकता है, जो रोजगार और संस्कृति के साथ-साथ मूल्यों और हितों के प्रति अधिक संवेदनशील हो।

ऐसा नहीं था कि इक्कीसवीं सदी की शुरुआत विशेष रूप से अच्छी रही हो। लगभग इसकी शुरुआत में ही, न्यूयॉर्क में 9/11 हमलों ने इसकी वैश्विक दिशा तय की। उनके परिणाम अगले दो दशकों तक दुनिया को प्रभावित करते रहे। उस समय जो कुछ भी हुआ, उसका शायद ही कोई अनुमान लगा सकता था, जिसमें यह भी शामिल है कि एक शक्ति की चिंताओं ने दूसरे के लिए रास्ता कैसे खोल दिया। उसके तुरंत बाद, इराक में एक अनावश्यक संघर्ष ने और भी अप्रत्याशित परिणाम दिए। आर्थिक मोर्चे पर, एक ऐसी दुनिया जो एशियाई वित्तीय संकट से उबर रही थी, एक दशक के भीतर एक वैश्विक संकट में फिसल गई।

विश्व व्यापार संगठन (WTO) में चीन का प्रवेश, 2001 में, वैश्वीकरण के एक ऐसे मॉडल का अग्रदूत था जिसके कई समाजों में गहरे राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव पड़ने वाले थे। पैमाने, मॉडल की प्रकृति, या इतने बड़े सब्सिडी के कारण कई लोग प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थ पाए गए। परिणामी खोखलेपन ने स्वाभाविक रूप से समय के साथ अपनी राजनीति बनाई।

जैसे-जैसे ये लंबी प्रवृत्तियाँ सामने आईं, विभिन्न क्षेत्रों और देशों ने अपनी व्यक्तिगत चुनौतियों और अवसरों से जूझना पड़ा। रोजगार के प्रति अधिक संवेदनशीलता, प्रौद्योगिकियों की सुरक्षा और डिजिटल दुनिया में डेटा की सुरक्षा उल्लेखनीय चिंताएँ थीं। अधिक जुड़े हुए अस्तित्व में, उनकी घरेलू उथल-पुथल भी वैश्विक मंच पर अधिक मजबूती से प्रतिबिंबित होने लगी।

जब हम दूसरे दशक के अंत तक पहुंचे, तो यह स्पष्ट था कि विश्व व्यवस्था के मूल सिद्धांत बदल रहे थे। प्रवृत्तियाँ अधिक अशांति और बड़ी शक्ति के टकराव की ओर एक आंदोलन का संकेत दे रही थीं, उन मान्यताओं को चुनौती दे रही थीं जिनसे हम सहज थे। किसी ने भी यह उम्मीद नहीं की थी कि एक पहले से हीTroubled दुनिया को एक 'सदी में एक बार' महामारी के रूप में झटका लगेगा। जब हम अफगानिस्तान और यूक्रेन के परिणामों को जोड़ते हैं, तो भविष्य और भी अधिक खुला लगता है। यह निश्चित रूप से एक नई दुनिया है, निश्चित रूप से एक बहादुर दुनिया नहीं।

#### बढ़ती महाशक्ति प्रतिस्पर्धा

हमारे विचारों को आकार देने वाले सिद्धांतों में प्रमुख है वर्तमान अंतरराष्ट्रीय प्रणाली के लिए अमेरिका की केंद्रीयता। यह स्पष्ट है, हालांकि, कि अफगानिस्तान और इराक में दो 'हमेशा के युद्धों' ने उस व्यवस्था को बहुत प्रभावित किया है। कि एक वैचारिक भ्रम से चिह्नित था और दूसरा पूरी तरह से

# अध्याय 5।

## एक परिवर्तनकारी दशक

### एक अग्रणी शक्ति की नींव रखना

IIIIIIn 2015, को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सार्वजनिक रूप से भारत की एक दिन अग्रणी शक्ति बनने की खोज को व्यक्त किया। कुछ लोगों ने इसे आगमन की घोषणा के रूप में लिया, जबकि वास्तव में यह एक महत्वाकांक्षा की अभिव्यक्ति थी। बीते दशक में, यह भी स्पष्ट हो गया है कि यह अब गंभीर प्रगति का काम है। 2023, में भारत मंडपम का उद्घाटन करते हुए, पीएम ने तीसरी सबसे बड़ी वैश्विक अर्थव्यवस्था के रूप में उभरने के दृढ़ संकल्प में इसी सोच को दोहराया। और एक साल पहले, परंपरा से हटकर, उन्होंने केवल एक कार्यकाल के लिए नहीं, बल्कि एक पूरे युग के लिए सोचने और योजना बनाने की सार्वजनिक अपील की। इसे *अमृत काल* के रूप में वर्णित किया गया, एक चौथाई सदी जिसका लक्ष्य

I

विकसित राष्ट्र के रूप में भारत का उदय है।

इनमें से प्रत्येक दावे के गहरे विदेश-नीति निहितार्थ हैं, खासकर इसलिए क्योंकि वे केवल एक व्यापक महत्वाकांक्षा के रूप में नहीं, बल्कि विशिष्ट लक्ष्यों और उद्देश्यों के साथ व्यक्त किए जा रहे हैं जिनके लिए भारत अब रणनीति बना रहा है। पिछले दशक की उपलब्धियां बताती हैं कि वैश्विक पदचिह्न के लिए नींव कितनी लगातार और व्यवस्थित रूप से रखी जा रही है।

प्रधानमंत्री के रूप में अपने पहले दिन से ही, नरेंद्र मोदी ने देश की विदेश नीति पर अपनी छाप छोड़ी। उन्होंने 2014, a को अपने शपथ ग्रहण समारोह में पड़ोसी नेताओं को आमंत्रित करके राजनयिक कल्पना का प्रदर्शन किया, एक ऐसा कदम जिस पर रूढ़िवादी सोच ने कभी विचार भी नहीं किया था। उसी वर्ष बाद में उनकी अमेरिका यात्रा ने एक नए प्रकार की सार्वजनिक कूटनीति को मंच पर लाने का काम किया। उन्होंने भारतीय प्रयासों में अधिक ऊर्जा भरी, अपने पूर्ववर्तियों से बहुत अलग तीव्रता और प्रसार के साथ पहुंच बनाई। बीते समय में, पीएम मोदी ने ऊर्जा और जलवायु से लेकर आतंकवाद-निरोध और कनेक्टिविटी तक, विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों और डोमेन में नए विचारों और पहलों को प्रस्तुत किया। वह प्रमुख वैश्विक मुद्दों पर सक्रिय रहे हैं, अक्सर सीधे परिणामों को आकार देते रहे हैं।

यह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो केवल अपनी विरासत पर विस्तार करने से संतुष्ट हो। इसके बजाय, उन्होंने विदेश नीति को अधिक रणनीतिक स्पष्टता दी है,

कोविड सहायता, डिजिटल डिलीवरी और विकास परियोजनाओं के संयोजन ने ग्लोबल साउथ में एक गहरा आधार भी बनाया है। विकासशील दुनिया को यह बात समझ में नहीं आई कि हमने ग्लोबल साउथ समिट के साथ अपनी जी20 अध्यक्षता शुरू की। न ही, इस मामले में, हमने जी20 में एयू की सदस्यता की वकालत की।

पिछले दशक ने यह भी निर्णायक रूप से स्थापित किया है कि भारतीय विकास पहल वास्तव में मांग-संचालित हैं और छिपे हुए एजेंडे को छिपाती नहीं हैं। निश्चित रूप से, वैश्विक राजनीति वर्तमान में जिन बड़ी दरारों से जूझ रही है, उन्हें भारत की क्षमता समग्र रूप से दुनिया में उसकी स्थिति का हिस्सा है।

#### मोदी-युग की कूटनीति को समझना

हमने अब तक इस बात पर ध्यान केंद्रित किया है कि भारत ने दुनिया से अलग तरह से कैसे निपटा है और किस हद तक, बदले में, इसने भारत के बारे में वैश्विक विचारों को आकार दिया है। हमारी सराहना, हालांकि, अधूरी होगी यदि हम इस बात पर पर्याप्त ध्यान न दें कि विदेश नीति का अर्थ क्या है, इसकी समझ में क्या बदलाव आया है। यह जोर में बदलाव की तरह लग सकता है, लेकिन यह उससे कहीं अधिक है।

विदेश नीति को अब राष्ट्रीय विकास और आधुनिकीकरण को गति देने के एक प्रत्यक्ष साधन के रूप में देखा जाता है। प्रौद्योगिकी, पूंजी और सर्वोत्तम प्रथाओं का प्रवाह परिणामी केंद्र बिंदु हैं। दुनिया को लुभाना निवेशकों को प्रोत्साहित करने में व्यक्त किया जाता है, विशेष रूप से व्यवसाय करने में आसानी करके। उनके साथ बातचीत प्रौद्योगिकी-प्रदाताओं और विभिन्न डोमेन में उच्च उपलब्धि हासिल करने वालों के साथ उतनी ही बार होती है। आत्मनिर्भर भारत अभियान और मेक इन इंडिया एक समग्र ढांचा प्रदान करते हैं जो ऐसे अभ्यासों की सुविधा प्रदान करते हैं, जिसमें विनिर्माण पर उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (PLI) या बुनियादी ढांचे में गति शक्ति जैसी पहलें शामिल हैं।

प्रौद्योगिकी और सर्वोत्तम प्रथाओं की खोज पीएम के विदेश यात्रा कार्यक्रम में भी दिखाई देती है, चाहे वह अमेरिका में बैटरी भंडारण सुविधा, दक्षिण कोरिया में नदी की सफाई, जापान में बुलेट ट्रेन, सिंगापुर में कौशल विकास, या जर्मनी में रेलवे स्टेशनों से संबंधित हो। जैसे-जैसे इस मानसिकता को बाहर की ओर लागू किया गया, इसने भारत की बेहतर क्षमताओं को दर्शाने वाली परियोजनाओं, उत्पादों और सेवाओं के निर्यात को भी देखा। इसमें दक्षिण एशिया से लेकर अफ्रीका और लैटिन अमेरिका तक फैले बुनियादी ढांचे, कनेक्टिविटी और सार्वजनिक सुविधाओं की एक श्रृंखला शामिल है, और सबसे महत्वपूर्ण बात, राष्ट्रों की बढ़ती सूची में रक्षा निर्यात में लगातार वृद्धि हुई है।

विभिन्न प्रारूपों और कई अवसरों पर उपस्थिति हमारे वैश्विक स्टॉक को दर्शाती है।

#### अपने समाधान खोजना

जैसे ही हम कोविड से बाहर आ रहे हैं, हर दूसरे देश की तरह, भारत भी अपनी लागतों का आकलन कर रहा है, अपने अनुभवों का मूल्यांकन कर रहा है और अपने सबक सीख रहा है। कुछ हद तक विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि हमने कई अन्य देशों की तुलना में तूफान को बेहतर ढंग से झेला है। मजबूत बुनियादी सिद्धांत और सोची-समझी नीतियां सुनिश्चित करती हैं कि भारत भविष्य में एक अग्रणी शक्ति बनने की राह पर बहुत आगे बढ़ रहा है। जबकि इसका बहुत कुछ क्षमताओं को लगातार बढ़ाने पर निर्भर करता है, यह उतना ही आवश्यक है कि भारत की अपनी संभावनाओं की दृष्टि आत्मविश्वास से भरी रहे। आखिरकार, हमने दशकों की कटौती, विभाजन, गैर-भागीदारी और जोखिम से बचने से संघर्ष किया है।

भविष्य का मार्ग उग्र स्वतंत्रता की मानसिकता पर निर्मित है, यद्यपि चुनौती इसे समकालीन समय के लिए ताज़ा करना है। इस दृष्टिकोण को व्यक्त करने की हमारी क्षमता स्वाभाविक रूप से हमारी ताकतों के साथ बदल गई है। आज, हमारे पास विदेशों में राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कई और संसाधन और साधन हैं। लेकिन क्षमताएं और आकांक्षाएं भी तभी परिणाम देती हैं जब वे उस दुनिया की सटीक समझ से छनकर निकलती हैं जिसमें हम रहते हैं।

इसलिए, कूटनीति का एक महत्वपूर्ण पहलू एक व्यापक परिदृश्य विश्लेषण है, जो नीतिगत विकल्प बनाने के लिए आवश्यक विरोधाभासों और बारीकियों को पकड़ता है। उच्चतम स्तर पर, यह प्रमुख राष्ट्रों के बीच के विरोधाभासों को ध्यान में रखते हुए बहुध्रुवीयता और पुनर्संतुलन पर केंद्रित है। क्षेत्र-दर-क्षेत्र ड्रिलिंग का अर्थ है शामिल मुद्दों की अधिक दानेदार समझ। इन सब में, वैश्वीकरण की सर्वोपरि वास्तविकता है, जिसके विचार अक्सर हमें सरलीकरण प्रस्तावों के माध्यम से गुमराह कर सकते हैं। जैसा कि हम तेजी से खोज रहे हैं, एक सत्य मुख्य रूप से एक गली के लिए काम करता है।

क्षमताओं को विकसित करने की खोज स्पष्ट रूप से घरेलू सुधार और आधुनिकीकरण पहलों से लाभान्वित होती है। इस जुड़ाव को इस दावे तक सीमित कर दिया गया था कि 8 प्रतिशत वृद्धि सबसे अच्छी विदेश नीति थी! हालांकि, वास्तविकता यह है कि बिना नींव और ढांचे को बदले हासिल की गई वृद्धि में अंतर्निहित सीमाएं थीं। इस दशक ने परिणामस्वरूप एक बहुत अधिक व्यापक प्रयास किया है जो स्थापित मंत्रों से अलग था। इसने एक कम रणनीतिक द्वारा प्रस्तुत की गई कमियों से बचने की भी कोशिश की।

# अध्याय 6।

## दोस्त बनाना, लोगों को प्रभावित करना

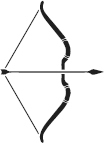
### भारत को एक वैश्विक जनसमूह क्यों बनाना चाहिए

IIIIIएक अग्रणी शक्ति बनने की अपनी खोज में, भारत को अपने व्यापक राष्ट्रीय शक्ति को लगातार बढ़ाते हुए, हमारे समय के दो बड़े विरोधाभासों को सफलतापूर्वक नेविगेट करना होगा। एक पूर्व-पश्चिम विभाजन है जिसे यूक्रेन संघर्ष ने तेज कर दिया है। दूसरा उत्तर-दक्षिण अंतर है जिसे कोविड, ऋण, जलवायु परिवर्तन के साथ-साथ खाद्य और ऊर्जा असुरक्षा ने बढ़ा दिया है। यह एक बढ़ती हुई शक्ति की स्वाभाविक मजबूरी के ऊपर है कि वह अपने दोस्तों को अधिकतम करे और अपनी समस्याओं को कम करे। वैश्विक क्षेत्र में भारत की आदर्श स्थिति की खोज एक निरंतर प्रयास हो सकता है। लेकिन बड़े महत्वाकांक्षाओं वाले लोगों को निश्चित रूप से विश्वसनीय साझेदार और समर्थन के आश्वासन स्रोत विकसित करने होंगे। उनका प्रयास परिदृश्य को आकार देना भी है

I

बजाय इसके कि केवल इसमें काम करें।

वह दिन गए जब भारत केवल सामयिक रूप से खुद को प्रेरित कर सकता था, जबकि प्रक्रियाओं को अपनी प्रगति करने की अनुमति देता था। हमारे हित समय के साथ केवल बढ़ रहे हैं, और इसलिए हमारी गतिविधियां और प्रोफ़ाइल भी बढ़नी चाहिए। *हमारे* सामने कार्य अमृत काल में भारत के लिए न केवल एक विकसित राष्ट्र बल्कि एक अग्रणी *शक्ति बनने की नींव* रखना है। यही कारण है कि सबका साथ, सबका विकास (सभी के साथ मिलकर सभी की प्रगति के लिए काम करना) विदेश नीति में उतना ही प्रासंगिक है जितना कि घरेलू नीति में। आखिरकार, कूटनीति का मतलब दोस्त बनाना और लोगों को प्रभावित करना है। और एक ऐसे देश के लिए जिसकी दुनिया को एक परिवार (वसुधैव कुटुम्बकम) *मानने की स्वाभाविक प्रवृत्ति है, इस* संबंध में अपार अवसर है।



# अध्याय 7।

## क्वाड: एक पूर्वनिर्धारित समूह

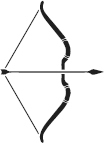
### जब सामान्य भलाई के लिए नई सोच की आवश्यकता होती है

TTTTTइंडो-पैसिफिक के एक रंगमंच के रूप में और क्वाड को एक राजनयिक मंच के रूप में महत्व को तेजी से पहचाना जा रहा है। कुछ लोग उनकी नवीनता में रुचि रख सकते हैं; अन्य उन्हें वास्तविक वैश्विक परिवर्तन के रूप में सोच सकते हैं जो चल रहा है। समझदारी से, वे बहस का विषय रहे हैं और कुछ हलकों में तो ध्रुवीकरण का भी। दोनों विषय कोविड महामारी से पहले के हैं लेकिन इससे प्रभावित हुए हैं। हम सहज रूप से जानते हैं कि यह

T

उन्हें साकार करने के लिए काफी राजनयिक ऊर्जा और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है।

अपनी बैठकों को शिखर स्तर तक बढ़ाए जाने के साथ, क्वाड अब एक नौकरशाही तंत्र नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय हितों के लिए एक महत्वपूर्ण सभा है। जैसे ही हम इस पर विचार करते हैं कि यह इतनी तेजी से कैसे हुआ, अधिक समझदार लोग सराहना करेंगे कि ये ऐसे विकास थे जो होने ही वाले थे। वास्तव में, यह एक पूर्वनिर्धारित समूह की कहानी है। लेकिन ऐसा होने के लिए भी, इसके लिए वैश्विक रुझानों को रणनीतिक स्पष्टता और साहसिक नेतृत्व के साथ प्रतिच्छेद करने की आवश्यकता थी। अतीत से एक विराम के लिए समझदार प्रतिरोध के सामने आने के साथ-साथ एक स्थिर पाठ्यक्रम भी महत्वपूर्ण था।



जब भगवान राम को उनके राज्याभिषेक की पूर्व संध्या पर वनवास भेजा गया था, तब वे अपने सौतेले भाई भरत से मिले थे, जिनके पक्ष में वह निर्णय लिया गया था। उनकी मुलाकात (जिसे भरत मिलाप के नाम से जाना जाता है) निश्चित रूप से, तब से युगों में कलात्मक और सांस्कृतिक चित्रण का एक पसंदीदा विषय है। शिकारी राजा गुह, जिनकी भूमि पर यह मुठभेड़ होती है, ने चारों भाइयों (क्योंकि जुड़वां लक्ष्मण और शत्रुघ्न भी वहां थे) के जमावड़े को देखा। वह चकित था कि प्रत्येक के अपने हित और दृष्टिकोण होने के बावजूद, वे एक-दूसरे के प्रति बहुत स्पष्ट स्नेह प्रदर्शित करते थे। ऐसा नहीं था कि उनके बीच कोई मतभेद या तनाव नहीं था। लक्ष्मण, विशेष रूप से, भरत की मां कैकेयी द्वारा वरदानों के आह्वान से बहुत आहत थे और इसने उनके दृष्टिकोण को प्रभावित करना जारी रखा।